1/ ७/

पारा तो. २ कचूर मा. ६ इलायची तो. १

तेजपत्र मा. ६ लौंग मा. ६ अजवायन मा. ६

धानियां मा. ६ मधु १ नग

17।।।

"श्री"

विद्वदवरकल श्रीराधाकृष्ण धार्मिक संस्थान, दिल्ली



प्रिय बन्धुवर,

ब्रह्मलीन स्वामी अनन्त श्री विभूषित श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी महाराज की प्रथम वार्षिक आराधना के उपलक्ष में आयोजित ब्रह्मयज्ञ, भंडारे एवं विद्वदवरकल श्री राधाकृष्ण धार्मिक संस्थान, दिल्ली के प्रथम वार्षिकोत्सव में, कार्तिक शुक्ल नवमी सं० २०४० तदनुसार १२ एवं १३ नवम्बर सन् १९८३ को स्थान धर्म संघ महाविद्यालय, २१७२ यमुना बाजार दिल्ली-११०००६ में आप सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम :-

१२-११-८३ [शनिवार] प्रातः ६ बजे से अपराह्न १ बजे

१ सत्संग, कीर्तन

२ ब्रह्मलीन स्वा० अनन्त श्री विभूषित श्री अमृतवाग्भवाचार्य जी के जीवन पर प्रकाश।

३. संस्था के अब तक के कार्यकलापों पर तथा आगामी कार्यक्रमों पर महामंत्री की रिपोर्ट।

अपराह्न ३ बजे से सांय ६ बजे

१. विशिष्ट विद्वानों तथा महात्माओं के प्रवचन।

२. ब्रह्मलीन स्वा० अनन्त श्री विभूषित 'श्री' जी की वस्तुओं का वितरण।

३. अनन्त श्री वि० 'श्री' जी के चित्रों/ग्रन्थों का प्रदर्शन एवं वितरण।

१३-११-८३ [रविवार] प्रातः ९ से १२

१. पूजा, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, गीता पाठ

अपराह्न १२ से १ — २. ब्राह्मणों एवं सन्यासियों को भोजन

" १ से २ — ३. प्रीतिभोज

" २ से ४ — ४. समापन भाषण, प्रसाद वितरण आदि।

निवेदक :-

पं० देशराज शर्मा	राजकुमार अग्रवाल	ड़ा० भवानी शंकर त्रिवेदी	डा० रघुनाथ शर्मा	रतनलाल जै[illegible]
(अध्यक्ष)	(महामंत्री)	सदस्य	(उपाध्यक्ष)	(प्रचारमं[illegible] कोषाध्[illegible]

|| श्रीस्वामी समर्थ ||

भगिनी वर्गास निवेदन

अक्कलकोटनिवासी परमसद्गुरु **श्रीगजानन महाराज** यांच्या आशिर्वादानें विश्वशांत्यर्थ, मुखपृष्ठांवरील महामंत्राचा नामजपयज्ञ करवीरस्थ भगिनींनी कोल्हापूर शक्तिपीठाचे परिसरांत सुरू केला आहे. तेरा कोटी जपसंख्या केवळ भगिनी वर्गानेंच पुरी करावी असा त्यांचा मानस आहे. कोणत्याही वर्गाचे स्त्रीस किंवा कुमारिकेस सोवळ्या-ओवळ्याचें बंधन नसलें तरी शुचिर्भुत होऊन हा जप करतां येईल.

हातांत माळ घेऊन किंवा अन्य प्रकारे जपसंख्या मोजून, होणारी जपसंख्या या वहींत लिहून ठेवतां येईल. आपण व आपल्या परिचयांतील मंडळींनीं केलेली नामजप-संख्या दर आठवड्यास खालील पत्त्यावर कळवितां येईल.

या दैवी कार्यात सहभागी होऊन जगदंबेची कृपा प्राप्त करून घ्यावी. ही इच्छा.

— बा. ग. वडनेरे

पत्ता :
कार्यवाह '**सत्संग**'
३७६ शुक्रवार पेठ, शिवाजी रोड,
पुणें २. (महाराष्ट्र)

टीप : वहींत फक्त जपसंख्या लिहावी. मंत्र लिहीत बसण्याची आवश्यकता नाहीं.

[पेपको प्रेस, पुणें २.]

॥ श्रीआदिमाया प्रसन्न ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

[नाम जपयज्ञ]

जागतिक शांतिप्रीत्यर्थ केलेल्या नाम जपयज्ञाची नोंद-वही.

क्रमांक : | |

नांव : ____________________

पत्ता : ____________________

____

फोन नं० ५२× || श्रीहरिः || तारका पता–'सन्मार्ग'



सन्मार्ग

(प्रमुख हिन्दी दैनिक साप्ताहिक और मासिक)

टाउनहाल, काशी ।

पत्र संख्या दिनांक...................१९४

प्रिय महाशय ।

आप को विदित ही होगा कि, पूजा और दीपावलीके उपलक्ष्य-में सन्मार्गका एक आकर्षक विशेषांक निकाला जा रहा है । यह अङ्क लगभग १५० पृष्ठोंका होगा तथा मुख्य और अन्य आठ पृष्ठ आर्टपेपर के होंगे । कहनेको आवश्यकता नहीं कि इसमें अनेक सुन्दर चित्र, व्यङ्गचित्र, उच्चलेख और कवितायें आदि रहेंगी ।

इस अंक का मूल्य १) होगा । यदि आप इसे पढ़ना चाहते हैं तो शीघ्र म० आ० द्वारा १) भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करालें । वी० पी० भेजनेका नियम नहीं है । अवसर खोने पर अङ्क मिलना असम्भव है । विशेष कृपा ।

व्यवस्थापक ।

आवश्यक नोट—साधारणडाक द्वारा विशेषांकका पैकेट भेजने पर डांककी गड़बड़ी के कारण यदि आप को अंक न मिल सका तो इस का उत्तरदायित्व कार्यालय पर न होगा । रजिस्ट्री द्वारा

चाहने पर चार आना अतिरिक्त मूल्य भेजना होगा ।



1063

The Manager,
Gita Bhawan, Swargashram
Rikhikesh, (Dehradun)

पुरोगम

विषय

१. भारतीय तन्त्र साहित्य और उसकी दार्शनिक पीठिका

शुक्रवार २६ जुलाई
सायं ७ से १०

२. भारतीय साहित्य की मूलभूत आस्था तथा वर्तमान लेखक

शनिवार २७ जुलाई
सायं ७ से १०

३. ईसाई चिन्तन और भारतीय साहित्य

रविवार २८ जुलाई
प्रातः ६ से १२, सायं ३ से ६

४. मानवीय आकृति और पुनर्जन्म

रविवार २८ जुलाई
सायं ६-१५ से



अध्यक्ष अधिवेशन

डा० लोकेश चन्द्र
अध्यक्ष भारतीय सा० संघ केन्द्रोय कार्य समिति

उपाध्यक्ष

क्षितीश वेदालंकार
अध्यक्ष भा० सा० संघ दिल्ली एकांश

प्रबन्ध प्रमुख

गजानन्द एडवोकेट
वैधानिक सलाहकार भा० सा० संघ

निवेदन

सम्मान्य बन्धु,

भारतीय साहित्यकार संघ दिल्ली एकांश की समास्या (अधिवेशन एवम् विचार संगोष्ठी) २६ से २८ जुलाई सन् १९६८ को तिब्बिया कालिज करौल-बाग में सम्पन्न होगी।

भगवत्कृपा से तंत्र साहित्य दर्शन एवम् इतिहास के परम श्रेष्ठ विद्वान् स्वामी अमृतवाग्भवाचार्य ने इस समास्या का शुभारम्भ करने की स्वीकृति दे दी है।

इसमें आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है। कृपया यथा समय पधार कर अपना स्नेह-योग प्रदान करें।

विनीत

सुशील कुमार जोशी
कार्यक्रम संयोजक

रघुवीर दास शास्त्री
साहित्य मंत्री, उपसंयोजक

विषय प्रवर्तक

१. सम्मान्य स्वामी अमृतवाग्भवाचार्य

२. डॉ० रामप्रकाश अग्रवाल
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
मेरठ कालिज (मेरठ विश्व विद्यालय)

डॉ० जगदीश भारद्वाज
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कालिज

३. पं० ब्रह्मदत्त भारती

४. भानुप्रसाद उमाशंकर त्रिवेदी
उपसंयोजक भा० सा० संघ मध्य प्र०

❀ समादृत सम्भागी ❀

सर्वश्री गुरुदत्त वैद्य, मुरारी राजीव, अवनीन्द्र-कुमार विद्यालंकार, पं० रामगोपाल शास्त्री वैद्य, पं० भगवद्दत्त, अश्विनी कुमार वर्मा डॉ० रामदत्त भारद्वाज, डॉ० रामप्रसाद मिश्र, डॉ० गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, डॉ० रामेश्वर दयालु मिश्र, कमला मधोक, डॉ० रामेश्वर दयालु अग्रवाल, डॉ० कृष्णदत्त भारद्वाज, डॉ० ओम-प्रकाश, डॉ० अर्जुनप्रकाश अग्रवाल, मानसिंह संसत्सदस्य डॉ० पं० ओमप्रकाश शर्मा, डॉ० विष्णुदत्त भारद्वाज, ओमप्रकाश कोहली, पं० मथुरा प्रसाद ज्योतिषी, नेमि-शरण मित्तल, डॉ० सतीश गर्ग, डॉ० वेदव्रत आलोक, पं० रामचन्द्र शर्मा, डॉ० रमानाथ त्रिपाठी, रामगोपाल शाल वाले संसत्सदस्य, कमल किशोर गोयनका, ललित मोहन जोशी, हरिश्चन्द्र पाठक, अयोध्यानाथ बल, जयवंशी झा, टेकचन्द, उदयप्रकाश, हेमराज चतुर्वेदी, कुंवर माधवसिंह दीपक, रामनरेश लाल श्रीवास्तव, दयानन्द डबराल, उमाशंकर वत्स।

सहयोगी

सर्वश्री सतीश दत्तात्रेय ... दैनिक हिन्दुस्तान
यतीन्द्र भटनागर ... ,, ,,
तनसुखराम ... सूर्य प्रकाशन
जयवंशी झा ... दैनिक वीरअर्जुन
अयोध्यानाथ बल ... ,, ,,
टेकचन्द्र --- ,, ,,
प्रेमनाथ चतुर्वेदी --- नवभारत टाइम्स
नन्दकिशोर तिरखा --- ,, ,,
धर्मवीर गांधी ... समाचार भारती
शिवकुमार गोयल ... हिन्दुस्तान समाचार
नरेन्द्र कोहली, तीर्थदास
ओमप्रकाश, जसवन्त राय

राजन इण्डस्ट्रीज, ग्लोव प्रिन्टर्स, बलवन्तराय, राजपाल सिंह, चूनीलाल सूद, कृष्णा आटो इण्डस्ट्रीज, रमेश इण्डस्ट्रीज, फारवर्ड इण्डस्ट्रीज, स्वस्तिक मशीनरी, धर्मयश आहूजा, जयदेव सर्राफ, लालचन्द, हरिवीरगिरि, मदन उप्पल, कृष्णलाल पटेला, ओमप्रकाश-आहूजा, चौधरी सदाराम, दुर्गादास डोगरा, रिखराम-चंडोक, साईंदास, मधुर प्रकाशन, जयपाल, मदनगोपाल गोयल, शहादरा गैस इण्डस्ट्रीज, रामकृष्ण भल्ला, साश्वत संस्कृति परिषद्, भारती साहित्य सदन, अम्बरीष, मनोहर वेदालंकार, चौधरी लखीराम।

ज्ञातव्य

इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया है। कार्यक्रम तथा वक्ताओं के क्रम में परिवर्तन का अधिकार कार्यक्रम संयोजक को होगा। स्थानाभाव के कारण जिन सहयोगियों का नाम प्रकाशित नहीं हो पाया है उन सहित सभी के हम कृतज्ञ हैं।

२, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग, नई दिल्ली।

दूरभाष : ५६५६२६

जयश्री प्रिन्टर्स, दरिया गंज, देहली। फोन : २६१७७७

भारतीय साहित्यकार संघ,
दिल्ली एकाँश

'समास्या'

अधिवेशन तथा विचार संगोष्ठी

जुलाई २६ शुक्रवार
सायं ७ से १०

जुलाई २७ शनिवार
सायं ७ से १०

जुलाई २८ रविवार
प्रातः ६ से १२, सायं ३ से १०



सभा भवन, तिब्बिया कालिज, करौलबाग

में

आपको सादर आमन्त्रित करता है।

हरदयाल देवगुण संसद्सदस्य ... स्वागताध्यक्ष
जगदीश भारद्वाज 'सम्राट' --- संरक्षक
क्षितीश वेदालंकार --- अध्यक्ष
रामगोपाल जयेश --- संयोजक/मंत्री
सुशील कुमार जोशी ... कार्यक्रम सं०

सहित सदस्य गण

॥ श्रीः ॥

जय श्री त्रिगुणेश्वर महादेव



❀ कार्य-क्रम ❀

दिनांक २४-२-१९६६

देव-ग्रहपीठ मंडलादि पूजनम्, संकीर्तनम्।

दिनांक २५-२-१९६६

प्रातः ५ बजे से सायं ७ बजे तक

१. रथ यात्रा।

२. हवन-पूजन।

३. त्रिगुणेश्वर पूजनम् समय २-५०।

४. संकीर्त्तन।

५. प्रसाद वितरण।

श्री बजपेयी जी

Shri V. P. BAKSHI
33A H.H.F. Colony

...गुणेश्वर महादेव पूजनम् समारोह बड़ी धूमधाम से ...ा जा रहा है, अतः आप से प्रार्थना है कि आप उचित ...मय पर सपरिवार पधार कर धार्मिक कार्य-क्रम की शोभा बढ़ावें।

इस शुभ अवसर पर परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री १००८ महाराज आचार्य अमृत बाग्भव जी एवं पूज्य तिलपत वाले महाराज जी तथा अन्य सिद्ध महात्माओं, विद्वानों के दर्शनों का लाभ उठावें।

स्थान :—

शिवबाड़ी ग्राम सराय कालेखां'
(निकट निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन)
नई दिल्ली-१३ फोन नं० ७४७४२

स्वागत समिति—

१ श्री रतनसिंह चौधरी।
२. श्रीरामचन्द्र चौधरी।
३. श्री चरता चौधरी।
४. श्री मंगे चौधरी।
५. श्री दलीपसिंह नम्बरदार।
६ श्री पंडित बालकृष्ण।
७ श्री पं० जी बी अवस्थी।
८. तथा सर्व ग्राम निवासी।

निवेदक—

१. वैद्य बृहस्पतिदेव त्रिगुणा,
प्रधान।

२. श्री नित्यानन्द दत्त,
मन्त्री।

Bakshi

कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

॥ श्रीहरिः ॥

धर्म की जय हो !
अधर्म का नाश हो !
प्राणियों में सद्भावना हो !

विश्व का कल्याण हो !
गौमाता की जय हो !
गोहत्या बन्द हो !

धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी की जय हो !
हर हर महादेव !
रामराज्य की जय हो !

रामराज्य समाचार

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय, देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो, नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः॥

संस्थापक—अनंत श्रीविभूषित धर्मसम्राट ब्रह्मलीन स्वामी करपात्रीजी महाराज

संरक्षक—अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य (पुरी) गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी निरंजन देव तीर्थ जी महाराज
अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर (बद्रिकाश्रम) स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज
अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री नन्दनन्दनानन्द सरस्वती। (शास्त्री स्वामी जी) महाराज

वर्ष १] शनिवार १ मई १९८२ तदानुसार वैशाख शुक्ला नवमी २०३९ दिल्ली [अंक १५



(अनन्त श्री ब्रह्मलीन धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज)

श्री गणपति तत्व

समूहों के पालन करने वाले परमात्मा को ही गणपति कहते हैं। देवादिकों के पति को भी गणपति कहते हैं तथा सर्वविध गणों को सत्ता स्फूर्ति देने वाला जो परमात्मा है वही गणपति है। 'गणपत्यथर्शीर्ष' वचन से गणपति ब्रह्म ही हैं। गणपत्यथर्व'—श्रुति में गणपति को 'त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि' ऐसा कहा गया है। उसका अभिप्राय यह है कि गणपति के स्वरूप में नर तथा गज इन दोनों का ही सामंजस्य पाया जाता है। 'त्वं'—पदार्थ नर-स्वरूप है तथा 'तत्'—पदार्थ गजस्वरूप है एवं अखण्डेकरस गणपतिरूप 'असि' पदार्थ में इन दोनों का सामंजस्य है। गणेश में माया और मायिक का योग होने से वे एकदंत कहलाते हैं। गणेशजी चतुर्भुज भी हैं क्योंकि देवता, नर, असुर और नाग इन चारों का स्थापन करने वाले हैं एवं चतुर्वर्ग, चतुर्वेदादि के स्थापक भी हैं। वे चारों हस्तों में पाश, अंकुश, वर और अभय भक्तानुग्रहार्थ धारण करते हैं। भक्तों के मोहरूपी शत्रु को फंसाने के लिए 'पाश' तथा सर्वजगन्नियन्तृ-रूप ब्रह्म 'अंकुश' है। दुष्टों को नाश करने वाला ब्रह्म 'दन्त' और सर्वकामनाओं को पूर्ण करने वाला ब्रह्म 'वर' है। गणपति भगवान का वाहन मूषक है। 'मूषक' सर्वान्तियामी है, सर्वप्राणियों के हृदयरूप दिल में रहने वाला, सर्वजन्तुओं के भोगों को भोगने वाला ही है। मूषक जैसे प्राणियों की सर्वभोग्य वस्तुओं को चुराकर भी पुण्य-पापों से विवर्जित ही रहता है, वैसे ही मायागूढ़ सर्वान्तियामि भी सर्वभोग्य को भोगते हुए पुण्य-पापों से विवर्जित है। वह सर्वान्तियामि गणपति की सेवा के लिए मूषक रूप धारण कर वाहन बना। भगवान गणेश लम्बोदर हैं क्योंकि उनके उदर में ही समस्त प्रपंच प्रतिष्ठित है और वह स्वयं किसी के उदर में नहीं हैं। तथा च—"तस्योदरात्समुत्पन्नं नानाविश्वं न संशयः।" भगवान् 'शूर्प-कर्ण' हैं क्योंकि योगीन्द्र मुख से वर्ण्यमान तथा उत्तम जिज्ञासुओं से श्रूयमाण, अतः हृदगत होकर, शूर्प के समान पाप-पुण्यरूप रज को दूर करके ब्रह्म-प्राप्ति सम्पादित कर देते हैं। गणेशजी 'ज्येष्ठराज' हैं। सर्व-ज्येष्ठों के अधिपति या सर्वज्येष्ठ जो ब्रह्मादि उनके बीच में विराजमान हैं। वही गणेशजी शिव-पार्वती के तप से प्रसन्न होकर पार्वती पुत्र के रूप में प्रादुर्भूत हुए हैं।

श्री रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र जैसे दशरथ एवं वसुदेव के पुत्र रूप में प्रादुर्भूत होकर भी उनसे अपकृष्ट नहीं हैं, वैसे ही भगवान गणेश, शिव-पार्वती से उत्पन्न होकर भी उनसे अपकृष्ट नहीं हैं, अतएव उनकी शिव विवाह में विद्यमानता और पूज्यता होना कोई आश्चर्य नहीं है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में लिखा है कि पार्वती के तप से गोलोक निवासी पूर्ण परब्रह्म श्रीकृष्ण परमात्मा ही गणपति रूप से प्रादुर्भूत हुए हैं। अतः गणपति, श्रीकृष्ण, शिव आदि एक ही तत्व हैं। इसी गणपति तत्व को सूचित करने वाला ऋग्वेद का यह मंत्र है—

"गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥"

इससे मिलता-जुलता ही गणपति-स्तावक मंत्र यजुर्वेद में भी है—

"गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे" इत्यादि। ऋग्वेद के मंत्र का सर्वथा गणपति स्तुति में ही तात्पर्य है। □

अनाढ्या मानुषे वित्ते आढ्या वेदेषु ये द्विजाः।
ते दुर्धर्षा दुष्प्रकम्प्या विद्यातान्ब्रह्मणस्तनुम् ॥
(सनत्सुजातीय, २.३६)

—जो (ब्रह्मविद्वरिष्ठ) मानवीयवित्त (पुत्र, मित्र, कलत्र, वित्तादि) में अनासक्त रहते हैं (परन्तु) वेद (प्रतिपादित अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, शम, दमादि साधनों) में संलग्न रहते हैं वे ही अपराजेय एवं सिद्धान्त से न टलने वाले हैं। वह ही ब्रह्मस्वरूप हैं।

द्वारिका के शंकराचार्य का ब्रह्मीभूत होना: आस्तिक सनातन जगत की महान क्षति

गत चैत्र पूर्णिमा तदनुसार सात अप्रैल १९८२ को सनातनधर्म की एक और महानविभूति द्वारिका शारदापीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी महाराज के ब्रह्मीभूत हो जाने से आस्तिक सनातन जगत की महान क्षति हुई। ब्रह्मीभूत धर्म सम्राट् अनन्त श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के अभाव से क्षत धार्मिक जगत अभी सम्भल भी न पाया था कि एक और महानविभूति चल दी। दो मास के अत्यल्पकाल में दो अलभ्य एवं अमूल्य मूर्तियों का लोप मर्मान्तिक होने के साथ अपूरणीय भी है।

ब्रह्मीभूत जगद्गुरु श्री शंकराचार्य श्री स्वामी अभिनव सच्चिदानन्द-तीर्थ जी महाराज का शुभ प्रादुर्भाव दक्षिण भारत के मैसूर क्षेत्र के मुल्बागालु नगर में ईस्वीय सन् १९१९ की २५ सितम्बर को हुआ था। महाराजश्री बाल्यकाल से ही विरक्त प्रकृति थे। १५ वर्ष की अल्प आयु में १२ दिसम्बर, १९३४ को श्रीचरणों ने शिमोगा जिला के मठाधीश श्री स्वामी कृष्णानन्दतीर्थ जी महाराज से सन्यास दीक्षा ली तथा उन्हीं की देखरेख में श्रीचरणों की प्रारम्भिक शास्त्रीय शिक्षा सम्पन्न हुई। श्री स्वामी कृष्णानन्दतीर्थ जी महाराज के ब्रह्मलीन हो जाने पर श्रीस्वामी अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ जी महाराज उनके उत्तराधिकारी बने। अपने सौम्य स्वभाव, शास्त्रीय पाण्डित्य, वेदाशास्त्रानुमोदित वर्णाश्रम धर्म दर्शन एवं संस्कृति के प्रचार से आपने प्रभूत ख्याति अर्जित की।

सन् १९४५ में द्वारकाशारदापीठ के १०६ वें जगद्गुरु शंकराचार्य के ब्रह्मीभूत होने से शांकरपीठ रिक्त हो गया। ब्रह्मीभूत गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री भारतीकृष्णतीर्थ जी महाराज इस पीठ पर श्री पं० नन्दलाल जी शर्म्मा शास्त्री एम० ए०, एल एल० बी० (सम्प्रति स्वामी नन्दनन्दनानन्द सरस्वती जी) को अभिषिक्त करने के पक्ष में थे। श्री शास्त्री जी ने पहले तो इस विषय में अपनी स्वीकृति दे दी थी, परन्तु धर्म के व्यापक प्रचार की दृष्टि से मठ की परिधि से बाहर रहकर श्री स्वामी करपात्री जी महाराज को अपना जीवन समर्पित कर दिया। अतएव शांकरपीठ स्वीकार नहीं किया। इस पर गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी श्री भारतीकृष्णतीर्थ जी महाराज ने धार्मिक जगत के भास्वर नक्षत्र श्रीमदभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी महाराज को द्वारका-शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य के रूप में २० जून, १९४५ को अभिषिक्त किया। इन से पूर्व इस पीठ के शंकराचार्य स्वामी श्री माधव-तीर्थ जी महाराज थे। इस मठ के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में १९५ तक अभियोग चलता रहा तथा इस ही वर्ष में यह निर्णय स्वामी श्री अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज के पक्ष में हुआ।

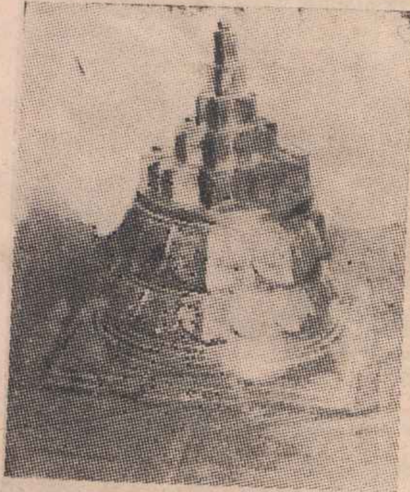
यह पावन तीर्थ द्वारकाशारदापीठ भगवान द्वारकाधीश एवं गोमती जी के मन्दिर के निकट जगत्मन्दिर क्षेत्र में स्थित है। इसकी दिशा पश्चिम होने से इसे 'पश्चिमाम्नाय' कहते हैं। "सिद्धेश्वर-भद्रकाली" इस पीठ के देव एवं देवी हैं। इसका वेद है "साम" तथा महावाक्य है "तत्त्वमसि"। इस पीठ के प्रथम आचार्य थे "श्री हस्तमलकाचार्य" एवं गत ७ अप्रैल, १९८२ के ब्रह्मीभूत होनेवाले ७७वें आचार्य थे अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अभिनव सच्चिदानन्दतीर्थ जी महाराज।

अपने जीवनकाल में आचार्यचरण ने शारदापीठ में ज्ञानमन्दिर की स्थापना की जिसमें विद्या की अधिष्ठातृदेवी शारदाम्बा की मूर्ति को स्थापित किया। इस ही मन्दिर में १७ चित्रों के माध्यम से भगवान आद्यजगद्गुरु शंकराचार्य के जीवन को दर्शाया गया है। इस ही मन्दिर में पूर्व के ७६ ब्रह्मीभूत शंकराचार्य की प्रतिमाएं विद्यमान हैं। यहीं पर १३३१ (अतिरुद्र) शिवलिङ्ग एवं १२०० शालिग्राम स्थापित हैं।

हिन्दू धर्मशास्त्रों एवं दर्शनशास्त्र के अगाध पाण्डित्य के साथ ही साथ ब्रह्मीभूत आचार्यचरण संस्कृत गुजराती, मराठी, तेलगु, कन्नड़, अंग्रेजी एवं फ्रेन्च के अधिकारी विद्वान थे। श्रीचरण संस्कृत शिक्षा के विशेष पक्षपाती थे। उनके अनुसार धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा छात्रों में व्याप्त अनुशासनहीनता के निवारण में समर्थ हैं। अतएव शास्त्रीय एवं धार्मिक शिक्षा के पक्षपाती थे। उनके मत में भारतीय-संस्कृति की भूमिका में निर्भीक परन्तु धार्मिक समाज की समुन्नति शिक्षा का मूल उद्देश्य होना चाहिए। धर्म से ही ईमानदारी, सच्चरित्रता, श्रद्धा एवं विश्वास सम्भव है। इसके अभाव में जीवन यात्रा सर्वथा असम्भव है। □

श्रीयन्त्र

—लक्ष्मणानन्द नाथ



श्री यन्त्र
श्री लक्ष्मणानन्द नाथ एवं श्री चड्ढा जी द्वारा दिल्ली में निर्मित एक फुट ऊंचा धातु का यन्त्र

सुविख्यात श्रीयन्त्र भगवती त्रिपुरसुन्दरी का यन्त्र है। इसे यन्त्रराज अथवा सर्वश्रेष्ठ यन्त्र भी कहते हैं। इस यन्त्र में समग्र ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा विकास दिखलाये गये हैं और साथ-ही-साथ यह यन्त्र साधक के मानव-शरीर का भी द्योतक है।

इस लेख के साथ दिये हुए मेरुपृष्ठ श्रीयन्त्र को देखिये। यन्त्र के सबसे भीतरी वृत्त में वृत्त के केन्द्रस्थ बिन्दु के चारों ओर नौ त्रिकोण हैं। इनमें से पांच त्रिकोण तो ऊर्ध्वमुखी हैं और चार अधोमुखी। ऊर्ध्वमुखी पांच त्रिकोण देवी के द्योतक हैं और शिवयुवती कहे जाते हैं। अधोमुखी चार त्रिकोण शिव के द्योतक हैं और श्रीकण्ठ कहे जाते हैं। पांचों शक्ति-त्रिकोण ब्रह्माण्ड के विषय में पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्राओं, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय तथा पञ्चप्राण के द्योतक हैं। मनुष्य-शरीर में यही पांच त्रिकोण त्वक्, असृक्, मांस, मेद तथा अस्थि रूप में स्थित हैं और चारों शिव (पुरुषवाची) त्रिकोण ब्रह्माण्ड में चित्, बुद्धि, अहंकार तथा मन रूप में स्थित हैं और पिण्डाण्ड में ये मज्जा, शुक्र, प्राण तथा जीव रूप से विद्यमान हैं।

यह चित्र सृष्टिक्रम का है और समय-मत के अनुयायी इसकी पूजा करते हैं। स्वामी शंकराचार्यजी इसी समय-मत को मानने वाले थे। अतः उनके प्रत्येक मठ में यह यन्त्र इसी प्रकार अंकित मिलेगा।

जैसा ऊपर कहा गया है, ये नौ त्रिकोण निराकार शिव की नौ मूल प्रकृतियों के द्योतक हैं। इन नौ त्रिकोणों के सम्मिश्रण से तेंतालीस छोटे-छोटे त्रिकोण बनते हैं। भीतरी वृत्त के बाहर आठ दल का कमल है और उसके बाहर सोलह दल का कमल है और इन सबके बाहर भूपुर है।

इन्हीं के विषय में स्वामी शंकराचार्यकृत आनन्द लहरी में लिखा है—

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाब्जत्रिवलय—
त्रिरेखाभिः सार्धं तव भवनकोणाः परिणताः॥

यह तो हुआ श्रीयन्त्र का साधारण परिचय। अब हम इस यन्त्र में स्थित नौ चक्रों का वर्णन करेंगे जिससे उपर्युक्त वस्तुओं के विषय में अधिक स्पष्ट ज्ञान हो जाए। इन नौ चक्रों के विषय में रुद्रयामलतन्त्र नामक ग्रन्थ का निम्नलिखित छन्द अधिकतर उल्लिखित होता है—

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मं
मन्वस्रनागदलसंयुतषोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च
श्रीचक्रराजमुदितं परदेवतायाः॥

अर्थात् इस श्रीयन्त्र के नौ चक्र इस क्रम से हैं—(१) बिन्दु, (२) त्रिकोण, (३) आठ त्रिकोणों का समूह, (४) दस त्रिकोणों का समूह, (५) दस त्रिकोणों का समूह, (६) चौदह त्रिकोणों का समूह, (७) आठ दलों वाला कमल, (८) सोलह दलों वाला कमल, और (९) भूपुर।

इन नौ चक्रों के नाम यथाक्रम ये हैं—

(१) सर्वानन्दमय (केन्द्रस्थ रक्तबिन्दु)
(२) सर्वसिद्धिप्रद (पीले रंग का त्रिकोण)
(३) सर्वरक्षाकर (हरे रंग के ८ त्रिकोण)
(४) सर्वरोगहर (काले रंग के १० त्रिकोण)
(५) सर्वार्थ साधक (लाल रंग के १० त्रिकोण)
(६) सर्वसौभाग्यदायक (नीले रंग के १४ त्रिकोण)
(७) सर्वसंक्षोभण (गुलाबी रंग के ८ दलों का कमल)
(८) सर्वाशापरिपूरक (पीले रंग के १६ दलों का कमल)
(९) त्रैलोक्यमोहन (हरे रंग का बाहरी स्थल)

अब इन चक्रों का यथाक्रम विवरण दिया जाता है।

(१) इस चक्र का केन्द्रस्थ बिन्दु भगवती त्रिपुर सुन्दरी अथवा ललिता का रूप है। यह बिन्दु नाद तथा बिन्दु के तीन बिन्दुओं के संयोग से बना है।

त्रिपुरा का ध्यान यों है—

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहां त्रिलोचनाम्।
पाशाकुंशधनुर्बाणान् धारयन्तीं शिवां भजे॥

भगवती के ये चारों अस्त्र-शस्त्र राग-द्वेष, मन तथा पञ्चतन्मात्राओं के द्योतक हैं। इन्हीं बन्धनों द्वारा देवी निराकार सदाशिव को साकार लीला में प्रयुक्त करती है।

[illegible] यह चक्र एक त्रिकोण से बना है। इस त्रिकोण के तीनों कोण [illegible], पूर्णगिरि तथा जालन्धरपीठ हैं और इनके बीच में ओड्याण-पीठ है। पहले कहे हुए तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवता कामेश्वरी, वज्रेश्वरी तथा भगमालिनी हैं और ये प्रकृति, महत् तथा अहंकाररूपा हैं। □

आज की राजनीतिक पुकार

—अनन्त श्री ब्रह्मलीन धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज



अ० भा० रामराज्य परिषद के संस्थापक अनन्त श्री स्वामी करपात्री जी महाराज १९८० की लोकसभा चुनावों में दिल्ली के नागरिकों को सम्बोधित करते हुए।

'राजनीति' एक ऐसा विषय बन गया है कि आज इसकी चर्चा देश के सुदूर आन्तरिक अंचलों में रहने वाले सीधे-सादे अनपढ़ व्यक्ति से लेकर बड़े-बड़े नगरों के निवासियों, बुद्धि-जीवियों में नित्य होती है। जिन्हें राजनीति की 'क-ख ग' तक का ज्ञान नहीं, वे ही आज राष्ट्र-नेता बन जाते हैं।

पूज्य श्री स्वामी जी का कथन है कि—"आश्चर्य है कि आज वकील बनने के लिए कानून (Law) पढना पड़ता है। चिकित्सक बनने हेतु आयुर्वेद, एलोपैथी आदि पढ़नी पडती है। इन्जीनियर बनने हेतु नाना प्रकार की शिल्प विद्याएं पढ़नी पड़ती हैं, किन्तु शासन-विधि निर्माता (एम० पी० व एम० एल० ए०) बनने के लिए कुछ भी पढ़ने की आवश्यकता नहीं। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह अनपढ़ हो, धड़ल्ले से शासक बन बैठता है, जो अपने मुकदमे की पैरवी के लिए घर की स्त्रियों तक बेचकर वकीलों की पूजा करता है, वही कानून बनाने वाला 'विधायक' बन जाता है।"

पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज कहते हैं कि—"वेद समस्त विद्याओं का उद्गम-स्थान है, फलतः राजनीति एवम् रणनीति का भी वही आधार है। राजधर्म में सम्पूर्ण राज्य का प्रतिनिधि राजा ही माना जाता है। अतः वहां उसी को सदाचारी एवम् स्थिर-स्थावर बनाने का प्रयत्न किया गया है।"

राजा को ईश्वर का प्रतिभू माना जाता है, फलतः उसमें आंशिकरूप से ईश्वर के गुण भी होने ही चाहिएं। इतिहास का अध्ययन कर स्वराष्ट्र एवम् परराष्ट्र के अतीत का ज्ञान, चारों वेद एवम् वृत्त पत्रों द्वारा वर्तमान का अनुभव तथा अनुमानों द्वारा भविष्य का अनुमान लगाकर नीति-निर्धारण करना चाहिए।

मन का प्रेरक अन्तर्यामी होता है। राजा को भी मन एवम् तदुपलक्षित इन्द्रियों का शासक एवम् नियामक होना चाहिए। इन्द्रियों का गुलाम (दास), मन का किंकर, विषयों का अनुगामी न बनकर उन सब का नियन्ता ही रहना चाहिए। जितेन्द्रिय तथा जित षडवर्ग मनीषी राजा (शासक) ही प्रजा पालन में समर्थ होता है। □

रामराज्य परिषद

परम वीतराग त्यागी तपस्वी सन्त ब्रह्मलीन अनन्त श्री धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज ने दैवी प्रेरणा से प्रेरित होकर विश्व कल्याण की कामना से पुनः 'राजनीति एवं धर्म' का पवित्र गठबन्धन कराने की दृष्टि से एक राजनैतिक दल की स्थापना—१६५२ में कर उसे अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

रामराज्य परिषद का अपना स्वतन्त्र स्थान है, स्वतन्त्र रूप है, इसका लक्ष्य स्पर्धा की राजनीति है ही नहीं, न वह वर्तमान साधनों से अन्य दलों से टक्कर ही ले सकती है। लौकिक प्रचार साधन भी उसे सुलभ नहीं। विपरीत समय और सर्व साधारण की धर्म विमुखता भी दल के मार्ग में भारी रुकावट है। तथापि, अनादि काल से चली आ रही धर्म नियन्त्रित राजनीति का अंकुर संजोते रहने तथा उस मूल बीज की रक्षा की पवित्र भावना से ही यह दल अस्तित्व में आया है, इसी आशा से कि यदि दुर्बल भी अंकुर बना रहा तो कभी अनुकूल समय आने पर यही विशाल वृक्ष बनकर सन्तप्त प्रजा को शीतल छाया प्रदान करेगा।

स्वामी करपात्री जी का स्पष्ट मत है कि 'जब तक धर्मयुक्त राजनीति को व्यवहार में स्थान नहीं मिलेगा, सुख-शान्ति नहीं प्राप्त हो सकेगी।' उन्होंने गम्भीर चिन्तन एवं भारतीय राजनीति शास्त्रों के गहन अध्ययन के उपरान्त परिषद का विधान प्रस्तुत किया। प्राचीन शास्त्रोक्त धर्मयुक्त राजनीतिज्ञ सिद्धान्तों को आज के भारत में कैसे व्यावहारिक रूप दिया जा सकता है—इस पर इस महान देशभक्त विचारक ने गम्भीरतापूर्वक विचार करके वर्तमान समय के अनुकूल एक राजनीतिक दर्शन प्रस्तुत किया है—यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह 'रामराज्य' का सांगोपांग विधान है, परन्तु जैसा कि ऊपर संकेत दिया गया कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'रामराज्य' की स्थापना के लिए शनैः-शनैः राजनैतिक प्रयास करते हुए धर्मयुक्त राजनीति की लौ को वर्तमान झंझावात में येन-केन-प्रकारेण प्रज्ज्वलित रखने के लिए उनका यह एक स्तुत्य प्रयास है। परिषद के विधानानुसार 'रामराज्य' वह है जहां—

(१) सर्वसाधारण के हित, शान्ति और सदाचार का ध्यान रखते हुए पक्षपात रहित सभी देश-वासियों के धर्म, संस्कृति तथा न्याय की रक्षा हो।

(२) प्रत्येक नर-नारी और बच्चों को अल्प मूल्य में भोजन, वस्त्र, घर, औषधि तथा न्याय सुलभ हो।

(३) किसी प्रकार का भ्रष्टाचार न हो, प्रत्येक राज्याधिकारी, ईमानदारी से पक्षपात रहित सब वर्गों का हित करें और प्रत्येक वर्ग दूसरे वर्गों का पूरक हो।

विधान सभा चुनावों में अ० भा० रामराज्य परिषद के उम्मीदवार

सिरसा (हरियाणा) २० अप्रैल : हरियाणा में आगामी विधान सभा के चुनावों के लिये एक विशेष बैठक सिरसा में सम्पन्न हुई जिसमें श्री वासुदेव शास्त्री, अतुल (महामंत्री) श्री रामावतार कौशिश (सह महामंत्री), श्री देवाधिदेव आश्रम, श्री महन्त मुरारी लाल, श्री राजकुमार दायमा, श्री दुलीचन्द जी, श्री प्रभुदयाल जी, श्री हरिशंकर दाधीच, श्री कृष्ण कुमार दुखिया, श्री जयप्रकाश जी, श्री भारतभूषण सिंगल, श्री घनश्याम दास उपस्थित थे। निर्णय के अनुसार निम्नलिखित महानुभावों ने अ० भा० रामराज्य परिषद के उम्मीदवार का नामांकन पत्र २२-४-८२ को भरा।

(१) श्री राजकुमार दायमा दाधीच……सिरसा से
(२) श्री दुलीचन्द……………………आदमपुर क्षेत्र से
(३) श्री बनवारीलाल…………………दड़वा कलां से
(४) श्री घनश्याम दास……………एलनाबाद (रिजर्व सीट)



अ० भा० रामराज्य परिषद के अध्यक्ष अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (बद्रिकाआश्रम) स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज)

आवश्यक सूचना

अ० भा० रामराज्य परिषद के समस्त सदस्यों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि १३ मई, १६८२ जेष्ठ कृष्णा पंचमी गुरुवार को अ० भा० रामराज्य परिषद का अधिवेशन होगा जिसमें अ० भा० रामराज्य परिषद के संरक्षक अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (पुरी) श्री स्वामी निरंजदेव तीर्थ जी महाराज एवं अ० भा० रामराज्य परिषद के अध्यक्ष अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (बद्रिकाश्रम) स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती जी महाराज एवं अ० भा० रामराज्य परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष अनन्त श्री स्वामी नन्दनन्दनानन्द सरस्वती जी महाराज सम्बोधित करेंगे जिसमें सभी महत्वपूर्ण विषयों पर विचार होगा और आगामी विधान सभा में खड़े हुए उम्मीदवारों की प्रचार सभाओं के [illegible]के क्षेत्रों में दौरा होगा।

अतः आपसे अनुरोध है कि अधिवेशन में अवश्य उपस्थित हों।

स्थान
नेहरू पार्क
१६८६ सैक्टर २२ बी
चन्डीगढ़

अध्यक्ष की आज्ञा से
रामावतार कौशिक
सह महामंत्री
अ० भा० रामराज्य परिषद

अमृतसर की दुखद घटना की घोर निन्दा

दिल्ली २७ अप्रैल : अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (पुरी) स्वामी निरंजन देव तीर्थजी महाराज ने अमृतसर में गाय का सिर लटकाए जाने की घोर निन्दा की एवं दोषी व्यक्तियों को कठोरतम दण्ड देने के लिए कहा। ऐसे घृणित कार्य की रोकथाम नहीं हुई तो देश में इसकी बड़ी प्रतिक्रिया हो सकती है जिसकी सारी जिम्मेदारी सरकार की होगी। हिन्दू-सिख एकता पर बल देते हुए श्री जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज ने कहा कि सिखों के दशवें गुरु गोविन्दसिंह जी ने हिन्दू एवं गऊ की रक्षा का संकल्प किया था उसे याद रखना चाहिए। सरकार को गौ रक्षा के तात्कालिक लंगड़े-लूले कानूनों को हटाकर—सम्पूर्ण भारत में सम्पूर्ण गोहत्या ब दी कानून बनाकर भारत भूमि से गोहत्या का काला कलंक मिटा देना चाहिए अन्यथा जो भी सरकार रहेगी उसका कल्याण कदापि नहीं हो सकता।

गौरक्षार्थ रामनवमी से आमरण अनसन पर बैठे मुनि ज्ञानचन्द्र जी महाराज से मिलने के लिए श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (पुरी) जयप्रकाश नारायण अस्पताल (इरविन हॉस्पिटल) गये। मुनि ज्ञानचन्द्र जी को आशीर्वाद दिया। उनके स्वास्थ्य के लिए पूछा और भगवान से प्रार्थना की कि मुनि ज्ञानचन्द्र जी को परम परमेश्वर शक्ति दें जिससे कि वे अपने संकल्प में सफल हों और गोहत्या बन्द हो। □



अनन्त श्री जगद्गुरु शंकराचार्य (पुरी)
स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज

गोवध पर प्रतिबन्ध सख्ती से लागू करें

नई दिल्ली २६ अप्रैल : श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लोक सभा में बताया कि उन्होंने राज्यों के मुख्यमन्त्रियों से कहा है कि गोवध पर प्रतिबन्ध को सख्ती से लागू करें। जम्मू कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्रियों ने पत्र के जवाब में कहा है कि वे अपने राज्यों में गोवध पर प्रतिबन्ध सख्ती से लागू करेंगे। □

शारदापीठ द्वारिका का मामला

स्वामी दत्त योगेश्वर की समादेश याचिका अस्वीकार

अहमदाबाद २७ अप्रैल : गुजरात उच्च न्यायालय ने स्वामी दत्त योगेश्वर की उस समादेश याचिका को अस्वीकार कर दिया जिसमें शारदापीठ के शंकराचार्य के रूप में अनन्त श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती जी महाराज के मनोनयन को चुनौती दी गई थी। अनन्त श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती जी महाराज का पट्टाभिषेक शारदापीठ के शंकराचार्य के लिए २७ मई को द्वारिका में होगा। □

हार्दिक वर्धापन एवं शुभ आशीर्वाद

रामराज्य परिवार में विवाह

सौ० का० राजकुमारी त्वरिता
देवी (वसुन्धरा देवी)
(आ० महाराज विश्वराज सिंह राजा साहब)
एवं
आयुष्मान संजय सिंह
रावल सा० बिसाऊ
(आ: स्व० रावल चक्रपाणि सिंह जी बिसाऊ)
जयपुर

पाणिग्रहण : २२-४-८२
दर्शनाभिलाषी राजा साहब, रानी साहिबा कवर्धा

सौ० का० साधनाकुमारी
(सुपुत्री दीनानाथ मंगलेश)
एवं
चि० जगदीश प्रसाद
(सुपुत्र श्री हरिप्रसाद चतुर्वेदी, लाला जी)

दिनांक : २७-४-८२ मंगलवार
विनीत : दीनानाथ (मंगलेश) चतुर्वेदी (मथुरा)

सौ० का० लक्ष्मीकुमारी
(सुपुत्री नन्दलाल चतुर्वेदी)
एवं
चि० मकसूदन लाल
(सुपुत्र श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी)

दिनांक : २७-४-८२ मंगलवार
विनीत : दीनानाथ मंगलेश चतुर्वेदी (मथुरा)

आयु० रानी कुमारी
सुपुत्री श्री घनश्याम गोप
(वाडम बाजार, ग्वालटोली हजारीबाग)
एवं
चि० तेजनारायण
सुपुत्र श्री विरेन्द्रसिंह यादव
(पौता हजारीबाग)

दिनांक १-५-८२
आकांक्षी घनश्याम गोप (हजारीबाग)

श्री मन्नारायण से करबद्ध प्रार्थना है कि वधु एवं वर को सावित्री एवं सत्यवान का सौभाग्य प्रदान करें। ग्रहस्थ आश्रम में यह प्रवेश परिवार, धर्म एवं देश के लिए मंगलमय हो। दोनों को भगवान दीर्घायु, सुख एवं समृद्धि से सम्पन्न करें। □

श्रीराम : शरणं मम ।

ब्रह्मलीन स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज

लेखक : सन्त रामशरणदास बालोतरा राज०

रामराज्य परिषद व अ० भा० धर्म संघ के संस्थापक, धर्मसम्राट अनन्त श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज का फरवरी को प्रात:काल ७ बजे काशी में केदार घाट पर देहावसान हुआ। नित्य की भांति उस दिन भी आपने रात्रि को २ बजे के लगभग उठकर स्नान, पुजा-पाठ, अभिषेकादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर तुरन्त बाद इस पार्थिव शरीर को छोड़ दिया।

पूज्य श्री स्वामीजी के काशीवास का समाचार बिजली की तरह सारे भारतवर्ष में फैल गया। हजारों की संख्या में लोग अन्तिम दर्शनों के लिए काशी जाने लगे। उनके पार्थिव शरीर को अन्तिम दर्शनार्थ टाउन हाल में रखा गया था। दूसरे दिन उनकी अन्तिम यात्रा में लाखों लोग सम्मिलित हुए। पुण्य सलिला भागीरथी गंगा के प्रवाह में आपके पार्थिव शरीर को विसर्जित कर अन्तिम संस्कार किया गया। सम्पूर्ण भारत वर्ष में आपके भक्तों की संख्या करोड़ों में है।

आपका जन्म प्रतापगढ़ जिला : उ० प्र० की कुण्डा तहसील के भटना गांव में संवत १९६४ की श्रावण शुक्ला द्वितीया रविवार को ईस्वीं सन् १९०७ में हुआ था। आप पं० श्री रामनिधि ओझा के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। उस समय आपका नाम 'हरनारायण' रखा गया।

ओझा परिवार का सनातनधर्म का कट्टर अनुयायी तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रेमी होने के कारण आपको प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत की ही दी जाने लगी। हरनारायण पढ़ने-लिखने में तेज थे। किन्तु बचपन से आपकी कुछ विलक्षण प्रकृति थी। सांसारिक पदार्थों से सदा विरक्त देर-देर तक एकान्त में चिन्तिन करते। कभी भी जी में आता तो घर से भाग निकलते। पिताजी फिर खोज कर पकड़ लाते।

एक बार पिता ने सोचा कि विवाह हो जायेगा तो सम्भवत: लड़का घर-गृहस्थी में फंस जाय और फिर बार-बार घर से भागना छोड़ दे। अत: हठात् पास के खंडवा गांव में आपका विवाह कर दिया। किन्तु इससे उस वैरागी बालक के हृदय में राग उत्पन्न न हो सका। एक दिन अवसर मिला तो फिर लुटिया-डोर सम्भाली किन्तु पिताजी ने जा पकड़ा।

'वंश की रक्षा के लिए मैं तेरा एक संतान चाहता हूं, हरनारायण उसे देकर तू चला जाना। फिर मैं नहीं रोकूंगा।' बस पिता की बात मानकर उनके इच्छा की पूर्त्ति के दिन की प्रतीक्षा करने लगे। श्री हरनारायण को १७ वर्ष की अवस्था में उनके घर भगवतीस्वरूपा एक कन्या ने जन्म लिया। बस पिता की अभिलाषा पूर्ण होते ही माता-पिता व नवजात कन्या के साथ पत्नि आदि सारे परिवार को रोता-बिलखता छोड़ व उनके मोह को तिनके के समान तोड़ कर घर से चल दिये वापस कभी न लौटने के लिए।

बन्धन से मुक्त बढ़ते हुए नवयुवक की भेंट टाट कोपीनधारी ध्यान-मग्न एक महात्मा श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी से हो गई जो आगे चलकर श्री ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य हुए। लेकिन उन्होंने आदेश दिया कि 'तुम अभी नरवर गुरुकुल जाकर गुरुतर शास्त्रीय अध्ययन करो। मां सरस्वती की तुम पर विशेष कृपा रहेगी।' तब वहां जाकर षड् दर्शनाचार्य पं० स्वामी श्री विश्वेश्वराश्रम जी महाराज को अपना गुरु वरण कर लगभग २ वर्ष तक व्याकरण, दर्शनादि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। अब आपका नाम 'हरिहर चेतन' था।

विद्याध्यन के बाद आपका आकर्षण तप की ओर हुआ और यह तरुण तपस्वी घोर जंगल में उत्तराखंड के हिम से आच्छादित हिमालय की तलहटियों में साधना में लीन हो गया। भूख-प्यास को हनन करते तीन वर्ष की कठोर साधना के पश्चात उनका तपस्या सफल हुई व आत्मदर्शन कर परमहंस अवस्था में पहुंच गये। अब वे केवल एक कोपीन धारणा करते। सदाचारी ब्राह्मणों के घर भिक्षा मांग लेते। भोजनादि के लिए अन्य पात्रों को त्याग कर करों को ही पात्र बनाकर भोजन करने के अब सब लोग उन्हें 'करपात्री' कहने लगे थे।

श्री हरिहरचेतन एक परमहंस के रूप में आश्रम में लौटे तो उनके मुख पर एक अलौकिक आभा थी। सभी ने गदगद होकर स्वागत किया। वहां से चल पड़े हरिद्वार के अर्ध-कुम्भी पर। वहां पं० मदनमोहन मालवीय जी से प्रणव मन्त्र दीक्षा विषय में शास्त्रार्थ भी हुआ। और फिर तो चल पड़ा शास्त्रार्थों का क्रम, जो प्रारम्भ में श्रीस्वामी रामदेव-जी, श्री मध्वाचार्य, स्वामी विद्यामान्य तीर्थ जी आदि के साथ हुआ।

स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का यह अद्वितीय विशेषता रही है कि किसी का कोई बात शास्त्रानुमोदित भी भले न हो पर शास्त्र विरुद्ध न हो तो मान जाना। और यदि शास्त्र विरुद्ध हो तो यावद् बुद्धि [illegible]लोदय दूर करना। श्री स्वामी जी अपनी प्रतिष्ठा, ख्याति, मौन लाभ [illegible]ादि के लिए शास्त्रार्थ के पक्ष में नहीं हैं।

[illegible]न्त है तत्व बोध, क्योंकि वादे-वादे जायते तत्व-बोध। एक बार हरिद्वार में मंडलेश्वर जब आपके शास्त्रार्थ विजयोत्सव : जुलूस [illegible]कालने की अनुमति मांगी तो आपने उस[illegible] अनुचित बताया कि शास्त्रार्थ तत्व निर्णय के लिए होते हैं न कि किसी के पराभव के लिए। □

पंजीयन क्र० 39243/81
डाक पंजीयन क्र० D (DN) 988
वार्षिक सहयोग रु० 25/-
आजीवन सहयोग रु० 501/-



(पाक्षिक)

श्री अमृत ला भवजी
बी-66, मोती बाग,
टाईप-द्वितीय, क्वाटर.

धर्मसम्राट को श्रद्धाञ्जलि—समर्पण—कवियों के उद्‌गार

हाय विधाता मिला तुझे क्या सब अनाथ कर डाले।
मर्माहत हो हुए व्यथित हम पड़े धर्म के लाले ॥
परम संत उठ गए धरा से धर्म सनातन के रखवाले।
भू-भारती करुण क्रंदन युत पड़ी आपके पाले ॥
शतमुख यज्ञ किया दिल्ली में द्वापर युग दर्शाया था।
भारत में हो धर्मराज्य घर-घर में सन्देश सुनाया था।
हिन्दू, मुसलिम अरु ईसाई, सबमें प्रेम बढ़ाया था।
सभी जीव सन्तान हैं प्रभु के प्रेम सद्‌भाव बढ़ाया था ॥
थे वीतराग वे परम तपस्वी होन जनों के हामी।
थे गुणागार विद्यानिधान परम तत्व विज्ञानी ॥
गो-भू-शास्त्र वेद हत्या को सह न सके थे स्वामी।
धर्मयुद्ध का बिगुल बजाया देश में बन पदगामी ॥
धर्म संघ अरु रामराज्य, परिषद का गठन बनाया था।
मार्क्सवाद का खण्डन कर शुभ रामराज्य बताया था ॥
धर्मनियंत्रित राजनीति को उत्तमराज्य बताया था।
उठ गये हाय ! इस भूमण्डल से धर्म का मार्ग सिखाया था ॥

करपात्री जग में भये शंकर के अवतार।
कठिन कुटिल कलिकाल में, कियौ धर्म विस्तार ॥
गोब्राह्मण प्रतिप्राण हे, युग के परम प्रवीन।
माघसुदी चौदस तिथी भये ब्रह्म में लीन ॥
असू रामनख विक्रमहि, संवत् युत रविवार।
धर्म सूर्य अब छिप गयौ, या जग कौ पतवार ॥
हे स्वामी करपात्रिजू, धर्ममूर्ति साकार।
'व्यास अश्रु' श्रद्धाञ्जलि, अर्पित बारम्बार ॥

—**प्रेमवल्लभ व्यास (मथुरा)**

□

योगामृतेन सततामरतां दधानः।
स्वामी यतीन्द्र मुकुट करपात्रि प्रख्यां ॥
दृष्टवा ऽधुना विकट कल्मण घोर चक्रं।
ब्रह्माख्यधाम विमलं विमलोगतः स्यात् ॥

—**राधाकृष्ण शास्त्री**

श्रीः श्रीः १००८ जयति श्री हरिहरानन्दोदिविस्थः

विशुद्धो धर्मिष्ठो विपुलयशसाख्यात विभवो।
वसू रामोविशे दिनमणि दिने भारत भुवः ॥
चतुर्दश्यां शुक्ले तपसि करपात्री हरिपदम्।
गतश्चामेयात्मोगम निगमवित् विश्वसुखदः ॥

भावत्क:—
लक्ष्मणप्रसाद शर्मा (सा० पु० श्रा०)

□

सनातनस्य धर्मस्यनैतारः शिरसि स्थिताः।
विद्वांसौ वेदशास्त्राणां निखिलानां चमार्मिका : ॥
परिषद् रामराजस्य धर्मसंघस्य चापिहि।
श्रेष्ठां संस्थापका श्वासन् स्वामिनः करपात्रिणः ॥
भौतिकं देह मृत्युंजय प्रियं धर्मं विहस्य च।
माघशुक्ल चर्तुदश्यां ब्रह्मणि लीनतांगतः ॥
संस्था वहव्यश्य देशे स्मिन् स्थापिता जीवनै स्वकै।
ग्रन्थाश्चवहव श्रेष्ठा महत्वेन युतास्तथा ॥
लिखिताजीवने स्वीये धर्ममार्ग प्रवोधकाः।
विद्वांसस्ते यथैवासन् वक्तारश्चतथैवते ॥
सनातनस्य धर्मस्य पोषका दृढ़ता गताः।
देशे स्मिन्निखिले भ्रान्त्वा धर्ममार्ग प्रवोध्य च ॥
स्वधर्मे चानयन् लोकानन्तान् स्वीय जीवने।
श्रद्धाञ्जलि स्वकीयास्तु चरणेष्वर्य याम्यहम ॥
लीनाय स्वामिने चापरब्रह्मणि शाश्वते।

—**पं० रघुनाथ प्रसाद शास्त्री 'चतुर्वेद'**

□

सहयोगी सज्जन चन्दे की राशि प्रबन्ध सम्पादक, श्री रामराज्य समाचार, ४४५९, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-११०००६ के पते पर भेजें। पत्र व्यवहार भी इसी पते पर करें।

सम्पादक—डा० रघुनाथ शर्मा, प्रबन्ध सम्पादक—श्री रामावतार कौशिक, मुद्रक एवं प्रकाशक—रामावतार कौशिक द्वारा अ० भा० रामराज्य परिषद २१७२ यमुना बाजार, दिल्ली-६ के लिये, भल्ला प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाकर प्रकाशित किया। **फोन: ५११०४८**